UNIFICATION OF GERMANY

Page No.:
Date:

जर्मनी का एकीकरण

1870 ई. में प्रशा के नेतृत्व में समस्त जर्मन राज्यों का एकीकरण सिर्फ बिस्मार्क की 'लौह एवं रक्त' नीति का परिणाम नहीं था बल्कि यह उन समस्त एकीकरण की प्रवृत्तियों की परिणति था जो इस शताब्दी के प्रारम्भ से ही भावात्मक एवं आर्थिक स्तर पर सक्रिय थी। जर्मन राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में एक विशेष बात यह है कि यह हरडर, कांट, फिक्टे, हीगल का दार्शनिक आधार लेकर विकसित राष्ट्रवाद "मैजिनी" के 'अन्तर्राष्ट्रवादी - मानववादी राष्ट्रवाद' से पर्याप्त रूप से संकीर्ण परंतु उग्र था जिसने जर्मनी के उदय से लेकर उसकी भावी नीतियों को भी गहरे प्रभावित किया।

18 वीं सदी में जर्मनी में करीब 300 जर्मन भाषी राज्य थे। वेस्टफालिया की संधि (1648 ई.) ने इन राज्यों को पवित्र रोमन साम्राज्य की दुनिया से बाहर सोचने की स्वतंत्रता प्रदान की थी। फ्रांसीसी क्रांति तक जर्मन राज्यों में 'हरडर' ने एक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद निर्मित करने की कोशिश की थी। सभ्यता के मामले में फ्रांस के कायल जर्मनों में उसने यह प्रचारित किया कि सच्ची सभ्यता स्थानीय मूल से उद्भूत होती है, किसी दूसरे राष्ट्र के अंधानुकरण से नहीं। इस प्रकार जर्मनी का यह राष्ट्रीय जागरण नेपोलियन के युद्धों के साथ-साथ सदियों पुरानी फ्रांसीसी प्रमुखता के विरुद्ध प्रकट हुआ। फ्रांसीसी क्रांति ने इस चेतना का संचार किया था कि जनता राष्ट्रीय शासन का अपने हित के लिए उपयोग कर काफी कुछ कर सकती है।

नेपोलियन के सैन्य-अभियान विशेषकर 1806 ई. में फ्रांस द्वारा प्रशा की पराजय ने जर्मनी में उग्रराष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। फिक्टे इसका प्रतिनिधि दार्शनिक था, पर वियना में शक्ति-संतुलन के तकाजे 39 जर्मन राज्यों का एक ढीला-ढाला परिसंघ बनाकर उसे आस्ट्रिया के प्रभुत्व में सौंप दिया गया। यह जर्मन राष्ट्रवाद की अनदेखी थी पर इसके बावजूद जर्मन राज्यों को नजदीक आने का इससे मौका मिला।

वियना पश्चात काल में जर्मनी में एक आर्थिक चेतना का संचार हुआ जिसने जर्मनी के औद्योगिकीकरण की पृष्ठभूमि निर्मित की एवं औद्योगिकीकरण में बाधक तत्वों को

Scanned with CamScanner

* Zollverein — This union abolished tariff barriers and reduces the currencies from 30 to two only.

तोड़ आर्थिक एकीकरण की कोशिश की। वियना में प्रशा को फ्रांस के पूर्व का जो राइन नदी का क्षेत्र मिला था वह प्राकृतिक संसाधनों से प्रचुर था। समस्या थी - प्रशा से इस क्षेत्र के दूरी की तथा संसाधनों के दोहन के तकनीक की। नवीन तकनीक का प्रयोग कर रूर के कोयला का दोहन किया गया। 1840 ई. तक इसेन के 'क्रूप औद्योगिक संस्थान' में उच्च कोटि का इस्पात तैयार होने लगा। इस्पात उद्योग में प्रगति का संकेत इस बात से लगाया जा सकता है कि जर्मन भाषी क्षेत्र में 1850 ई. तक 3000 मील रेल लाइन बिछाई जा चुकी थी। रेलवे ने जर्मनी के आर्थिक एकीकरण को गति प्रदान की। रजवाड़ों ने भी चुंगी व्यवस्था में सुधार के प्रयास द्वारा इसे प्रोत्साहित किया। 1834 ई. में कुछ राज्यों ने एक चुंगी संघ अर्थात् "जॉलवरीन" की स्थापना की जिसमें 1858-59 तक सभी राज्य शामिल हो गये। प्रतिद्वंद्वी आस्ट्रिया को प्रशा ने इसमें शामिल नहीं किया। इस संघ की स्थापना हो जाने से एक जगह चुंगी देकर सारे राज्यों में व्यापार को संभव बना दिया गया। इस प्रकार जर्मनी के राजनीतिक एकीकरण से पूर्व ही आर्थिक एवं भावात्मक एकीकरण पूर्ण हो गया।

1848 ई. में फ्रांसीसी क्रांतियों की गूंज ने जर्मन राज्यों को भी आंदोलित कर उदारवादियों के विद्रोह प्रवृत्तियों को संभव बनाया था, पर जर्मन राष्ट्र के निर्माण की उनकी कोशिशें 'फ्रैंकफर्ट संसद' के प्रतिक्रियावादी तत्वों के बहुलता के कारण धरी रह गई। अपनी आत्मा से सैनिक प्रशा नरेश "विलियम I" ने सैन्य निर्माण की योजना बनाई पर संसद ने उसे अस्वीकार कर दिया। इसी राजनीतिक गतिरोध के बीच 1862 ई. में "बिस्मार्क" को विलियम प्रथम ने अपना चांसलर नियुक्त किया।

बिस्मार्क कूटनीतिक राजनीति में सिद्धहस्त था। उद्देश्यों की स्पष्टता उसे एक लक्ष्यभेदी दृष्टि प्रदान करती थी। उसने जर्मन डायट में चांसलर बनते ही स्पष्ट घोषणा कर दी — "जर्मनी का एकीकरण भाषणों द्वारा नहीं, संसदीय बहुमतों के वोटों द्वारा नहीं, अपितु "खून और इस्पात" द्वारा होगा।" उसने बिना संसद की स्वीकृति के कुशलतापूर्वक

Scanned with CamScanner

करों की वसूली की एवं अपने सम्राट के कंधे से कंधा मिलाकर सैन्य निर्माण किया।

बिस्मार्क को राजनीति का गहन अनुभव था। वह स्पष्ट देख रहा था कि आस्ट्रिया को जर्मनी की राजनीति से निकाल बाहर किये बिना राष्ट्रीय एकीकरण संभव नहीं था। सैन्य निर्माण के बाद उसने आस्ट्रिया को मित्रहीन बनाने की सोची। वह रूस और फ्रांस में राजदूत रह चुका था। रूस अपनी प्राकृतिक सीमा की प्राप्ति हेतु पूर्वी समस्या में रुचि ले रहा था जहाँ उसके स्वार्थ आस्ट्रिया से टकराते थे। इसका उपयोग कर उसने रूस से मित्रता कर ली। फ्रांस वियना की व्यवस्था से क्षुब्ध था। बिस्मार्क ने 'नेपोलियन तृतीय' से "आस्ट्रिक-प्रशा" युद्ध के समय तटस्थता का वचन ले लिया था तथा अनौपचारिक रूप से नेपोलियन को कुछ क्षेत्रों का आश्वासन भी दे डाला।

श्लेसविग तथा होलस्टीन की डचियों के प्रश्न को लेकर बिस्मार्क ने सर्वप्रथम डेनमार्क से युद्ध किया। उसने बड़ी ही चतुराई से आस्ट्रिया को भी डेनमार्क के युद्ध के लिए राजी कर लिया। श्लेशविग पर प्रशा और होलस्टीन पर आस्ट्रिया का आधिपत्य कायम हुआ। इन दोनों ही डचियों पर भविष्य में कोई निर्णय आस्ट्रिया और प्रशा को संयुक्त रूप से लेना था। बिस्मार्क ने डचियों के प्रश्न को ऐसे उलझा दिया कि 1866 ई. में आस्ट्रिया के साथ उसका इच्छित युद्ध शुरू हो गया।

1866 ई. का "आस्ट्रो-प्रशा युद्ध" मात्र सात सप्ताह में आस्ट्रिया की शर्मनाक पराजय के साथ समाप्त हो गया। प्रशा ने आनन-फानन में केवल दक्षिण के चार राज्यों को छोड़ समस्त जर्मन राज्यों पर अधिकार कर लिया तथा पुराने जर्मन महासंघ के स्थान पर प्रशा के नेतृत्व में "उत्तरी जर्मन महासंघ' की स्थापना कर ली।

आस्ट्रिया की घोर पराजय से फ्रांस की आँखे खुली। उसे यह ज्ञान भी नहीं था कि उसकी सीमा पर एक शक्तिशाली राज्य का उदय हो चुका है। बाकी बचे चार राज्यों के प्रशा में विलय को रोकने का उसने निर्णय ले लिया।

Scanned with CamScanner

अब 'फ्रांस-प्रशा युद्ध' की बारी थी।

1870 ई. में जब स्पेन का राजसिंहासन रिक्त होने पर प्रशा के राजवंश "होहेंजोलर्न वंश" को आमंत्रित किया गया तो फ्रांस ने इसपर आपत्ति व्यक्त की। बिस्मार्क तो युद्ध चाहता ही था। उसने इलेक्ट्रानिक मेल के तार को इस प्रकार तोड़-मरोड़ कर पेश किया कि प्रशा में फ्रांस विरोधी भावना भर गई। सेडॉन में जब फ्रांस-प्रशा की सेनाएँ भिड़ी तो प्रशा को टेलीग्राफ एवं रेलवे का लाभ मिला। विद्युत-गति से उसकी सेनाएँ सीमा पर पहुँच गई तथा फ्रांस की पराजय हुई। चार दक्षिणी राज्य — बैवेरिया, बाडेन, बुर्टेम्बर्ग तथा हेस डार्म्सटाड - भी जर्मन संघ में मिला लिये गये। जर्मन सेनाएँ पेरिस तक पहुँच गई, नेपोलियन बंदी बनाया गया तथा उसी के देश में वार्साय के भव्य शीशमहल में 'विलियम प्रथम' को जर्मन सम्राट घोषित किया गया। बाद में फ्रैंकफर्ट समझौते के अनुसार जर्मनी ने फ्रांस की 'आल्सेस और लॉरेन' भी छीन लिए।

इस प्रकार बिस्मार्क की 'लौह एवं रक्त नीति' के अनुसार तीन युद्धों के पश्चात् जर्मनी का एकीकरण हुआ। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह जर्मनी की एकीकरण से अधिक जर्मनी का प्रशाकरण था। बिस्मार्क के प्रशा ने जर्मनी को निगल जर्मन राष्ट्र का प्रस्तव किया था। नये परिसंघ में आस्ट्रिया की प्रभुता से मुक्त जर्मन राज्यों को स्वायत्तता तो मिली पर सम्प्रभुता नहीं।

—— X ——

Scanned with CamScanner